

हम बच्चों को ईश्वरीय श्रीमत् देकर, शूद्र से दैवी आत्मा बनाने वाले पतित-पावन बाप ने कहा, अंतर्मुखी हो कर अपनी संभाल करो. कोई भी मायावी इच्छा न हो. कोई भी बेकायदे चलन न हो. सदा एक ईश्वरीय श्रीमत् का हाथ हमारे हाथ में हो.

### क्या हैं ये ईश्वरीय श्रीमत्?

1. बाबा हमें सबसे पहली मत देते हैं, बच्चे खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो, तो तुम्हारे 63 जन्मों के विकर्म, जो विकारों के रूप में आत्मा में हैं वह भस्म हो जायेंगे और आत्मा संपूर्ण पावन बन जायेंगी.

(प्रैक्टिस -- देही-अभिमानि रहकर जीवन जीने की)

2. संपूर्ण पवित्र ब्राह्मण जीवन. इसलिए बाबा हमें युक्ति बताते हैं एक-दूसरे के प्रति आत्मा भाई-भाई की वृत्ति रख, दृष्टि से एक-दूसरे को भृकुटी में आत्मा भाई को ही देखो.

(प्रैक्टिस -- ब्राह्मण जीवन जीते अन्य आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते अंदर से वृत्ति आत्मा भाई-भाई की रखो)

3. मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते हैं, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अंतर्मुखी बन जायेगी. अंतर्मुखी स्थिति बहुत मजबूत स्थिति है, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं.

(प्रैक्टिस - अलग-अलग रीति से स्वदर्शन चक्र फिराने की प्रैक्टिस करो.)

4. साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्यता. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओं से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्य दिलाते हैं और सच्चाई, सादगी और स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

(प्रैक्टिस - जरूरीयात से ज्यादा साधन, सम्पत्ति और सम्बन्ध में अपना अमूल्य समय बरबाद न करो. अपने ब्राह्मण जीवन में सच्चाई, सादगी और स्वच्छता को धारण को धारण करो)

5. कर्म-योगी जीवन. ब्राह्मण जीवन में माया से बचने के लिए, बाबा हमें याद की यात्रा में रहने का सिखलाते हैं. हर कर्म करते बुद्धि का योग एक बाप से रहे इसे ही कर्म-योगी जीवन कहा जाता है.

(प्रैक्टिस - कर्म करते बाबा की याद रहे इसलिए ट्रैफिक कंट्रोल का उपयोग करो)

6. दैवी-गुण धारण करना है. बाबा ने कहा है, किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना है. औरों के दुख को अपना दुख समझकर उनके दुख दूर करने में उदार दिल बनना है. दूसरों के दुख को देख खुद को भी दुखी नहीं बनाना है.

(प्रैक्टिस - दैवी-गुणों को धारण करने का चार्ट रखो)

7. ईश्वरीय नियमबद्ध जीवन. सुबह अमृतवेला, मुरली क्लास, खाने-पीने की धारणा, कम बोलो - मीठा बोलो - धीरे बोलो. साम का योग ओर चार्ट.

(प्रैक्टिस - नियमित ब्राह्मण जीवन बनाओ)

8. खुद को निमित्त समझ कर, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करना ओर ट्रस्टी हो कर संसार का कारोबार चलाना.

(प्रैक्टिस - उपराम, न्यारा-प्यारा होकर रहो)

ॐ शांति.